आपातकाल में सृजन फुलवारी

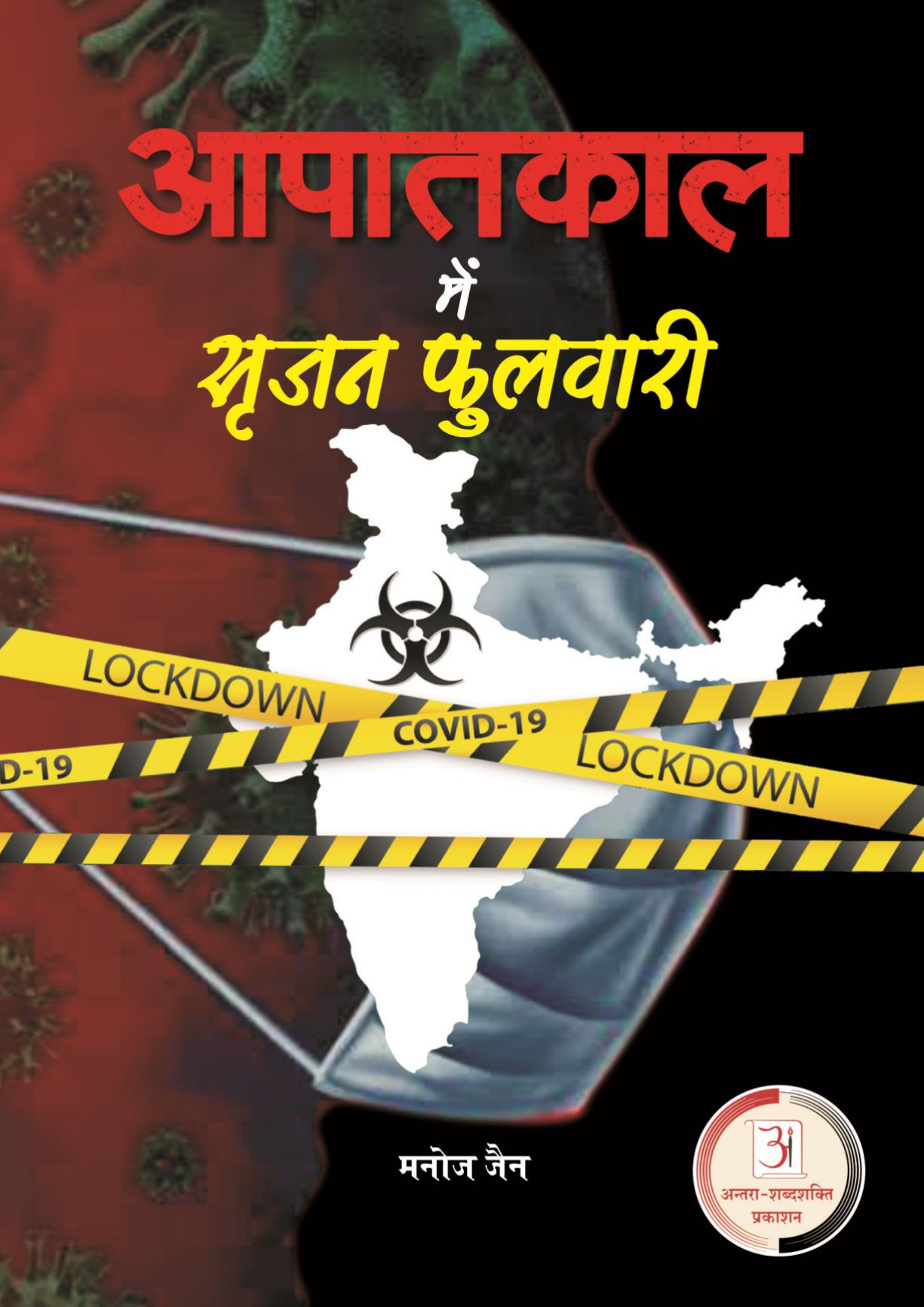

मनोज जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मनोज जैन 'मधुर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-146-6
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, मनोज जैन 'मधुर'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY MANOJ JAIN MADHUR
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	झूलते अरमान रहते	6
2.	यह गुंडों का देश	7
3.	ऐसा भी दिन आएगा	8
4.	मोनालिशा	9
5.	चार दिन की जिंदगी	10
6.	दीवाली आई	11
7.	दीप जलता रहे	12
8.	उनसे प्यार करुँ	13
9.	मौन तो तोड़ो	14
10.	एक किला और	15
11.	देख रहा हूँ	16
12.	पतिंगे जो ठहरे	17
13.	ठूँठ बसंत हुआ	18
14.	कमियाँ इस आलाप की	19
15.	एक मुट्ठी रेत	20
16.	सगुन पाँखी लौट आओ	21

झूलते अरमान रहते

वादियों ने बर्फ की,
चादर धवल जब से बिछा ली।
तिर गई छवि नयन में,
कश्मीर की डल झील वाली।

इस अलौकिक मुग्धता पर
रीझते हैं चाँद तारे।
याद में आये उतर
जल बिम्ब में तिरते शिकारे।
फागुनी सन्देश देती
पुष्प वर्णी पीत डाली।

वादियों में मोहिनी
नदिया ध्वनि कल कल सुनाये।
ऋतु वसन्ती
मोंगरे की गंध मन को खींच लाये।
कह रहा खुशनुमा मौसम
आज थोड़ी सी चढ़ा ली।

पर्यटक पा प्यार
सचमुच दीन दुनिया भूल जाते।
गोद में बीते हुए
पल क्षण सुनहरे याद आते।
कह रहा हर एक आकर
बात तेरी है निराली।

मद भरे वातावरण में
सप्त रंगी फूल फूले।
झूलते अरमान रहते
अलगनी पर डाल झूले।
स्वर्ग धरती का यही है
और हमने छाँव पाली।

यह गुंडों का देश

खुले आम हत्या करती है
टोपी, ख़ाकी वर्दी।
अफसर-बाबू की
जनता पर दहशतगर्दी।
लोक तंत्र में पूजे जाते
ऐसे कई विशेष।

है बोतल में बंद शिवा का,
व्यापम वाला जिन्द।
यहाँ वहाँ से तेरे बेटे,
काटें तुझको हिन्द।
दर्शक बनकर देखा करते
ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

खुली आँख में मिर्ची भुरकें
समझा हमें अनाड़ी।
मरणासन्न देश की हालत
फिर भी चलती नाड़ी।
अब भी माला पहन रहे हैं
शर्म नहीं है शेष।

सुघड़ काल ने सिग्नल देकर
बजा दिया है हॉर्न।
देख रहा है मुआ बुढ़ापा
फिर भी मूवी पोर्न।
लटक रहे हैं पाँव कब्र में
फिर भी रँगता केश।

ऐसा भी दिन आएगा

हाथ मलेगा शीश धुनेगा, रह रह कर पछताएगा।
ऐसा भी दिन आएगा।

बचपन बीता खेल कूद में,
उम्र कटी नादानी में।
डूब रही कागज़ की कश्ती
फिर से उथले पानी में।
चाहे जितना जोर लगा ले
नाव बचा ना पाएगा।
ऐसा भी दिन आएगा।

काम बहुत से थे करने को
उन्हें बावरे भूल गया।
वशीभूत होकर माया के
आठ मदों में फूल गया।
उलझीं कड़ियां अंत समय में,
कैसे तू सुलझाएगा।
ऐसा भी दिन आएगा।

कर दे कमरा तन का खाली
कर तैयारी चलने की।
सूखी लकड़ी राह निहारे
पगले तेरे जलने की।
अकड़ी काया लेकर कैसे
अपनी अकड़ दिखाएगा।
ऐसा भी दिन आएगा।

मोनालिशा

तिशा तुम हमारी हो
मोनालिशा।

मम्मा के दिल की
हो नन्हीं कली।
पापा की बेटी हो
सबसे भली।
जगत को दिखानी है
तुमको दिशा।

दादी के सपनों का
संसार हो।
दादा की दुनिया का
तुम प्यार हो।
तुम्हीं हो तमस में
उजाली निशा।

चार दिन की जिंदगी

चार दिन की जिंदगी
लिख दी तुम्हारे नाम।

पी गए हमको समझ
तुम चार कश सिगरेट।
आदमी, हम आम
ठहरे बस यही है रेट।
इस तरह दिन बीत जाता
घेर लेती शाम।

चढ़ गए हमको समझ
मजबूत सा पाया।
इस कुटिलता पर
मुकुर मन खूब हर्षाया।
नियति तो अपनी रही
आना तुम्हारे काम।

हम रहे प्यादे कभी
समझे गए असबाब।
काँच की मानिंद टूटे
छन्न से सब ख़्वाब।
इस तरह उपभोग तक
होते रहे नीलाम।

पी गए हमको समझ
दो इंच की बीड़ी।
बढ़ गये कुछ लोग
कन्धों को बना सीढ़ी।
नामवर होना हमें था
पर रहे बेनाम।

दीवाली आई

स्वर्णिम किरण धरा पर उतरी
जी भर मुस्काई। दीवाली आई।

जले नेह के दीप दिलों में
नव उत्सव जागा।
अपनी कारा तोड़ स्वयं ही
अंधियारा भागा।
रंगत घुली नई
मौसम ने ले ली अंगड़ाई।
दीवाली आई।

रौशन हुआ धरा का आँगन
मांडे रांगोली।
सौगातों को दे आमंत्रण
फैला कर झोली।
नेह पगे अन्तर
अब उच्चारें आखर ढ़ाई।
दीवाली आई।

फुलझड़ियों से नित्य नेह के
सुंदर फूल झरें।
वंचित,शोषक की कुटिया में
चलकर दीप धरें।
भेदभाव की चलो पाट दें
युग युग की खाई।
दीवाली आई।

दीप जलता रहे

नेह के ताप से, तम पिघलता रहे।
दीप जलता रहे।

शीश पर सिंधुजा का
वरद हस्त हो।
आसुरी शक्ति का,
हौसला पस्त हो।
लाभ-शुभ की घरों में,
बहुलता रहे। दीप जलता रहे।

दृष्टि में
ज्ञान-विज्ञान का वास हो।
प्रेम में, प्रीत का
दर्श, उल्लास हो।
चक्र-समृद्धि का,
नित्य चलता रहे। दीप जलता रहे।

धान्य-धन, सम्पदा,
नित्य बढ़ती रहे।
बेल यश की सदा
उर्ध्व चढ़ती रहे।
हर्ष से बल्लियों दिल,
उछलता रहे। दीप जलता रहे।

हर कुटी के लिए
एक संदीप हो।
प्रज्ज्वलित प्रेम से,
प्रेम का दीप हो।
तोष नीरोगता की,
प्रबलता रहे। दीप जलता रहे।

उनसे प्यार करूँ

मन का हिरन कुलांचें भरता
कैसी-कैसी बातें करता
चाहत रखता हर पल मुझसे
आँखें चार करूँ, उनसे प्यार करूँ।

मन का मोर मगन हो झूमे
मेंहदी रची, हथेली चूमे
चाह रहा है यह व्याकुल मन
मैं अभिसार करूँ, उनसे प्यार करूँ।

मन का खरहा यूँ शर्माये
राग सुनाए, गाने गाए
कहता सपने सारे मन के
एकाकार करूँ, उनसे प्यार करूँ।

मन की तितली उड़-उड़ जाए
दिल से दिल तक, जुड़-जुड़ जाए
बोल रही है आकर मुझसे
मैं मनुहार करूँ, उनसे प्यार करूँ।

मन का पाँखी पंख पसारे
ढूंढे अब तक लाख सहारे
मीत मिला ना उनसा कोई
यह स्वीकार करूँ, उनसे प्यार करूँ।

मौन तो तोड़ो

क्या सही, क्या है गलत
इस बात को छोडो
मौन तो तोड़ो।

नेह के मधुरिम परस से
खिले मन की पाँखुरी
मौन टूटे तो बजे
मनमीत, मन की बाँसुरी
अजनबी हम-तुम बनें
सम्बन्ध तो जोड़ो
मौन तो तोड़ो।

रचें मिलकर एक भाषा
राग की अनुराग की।
जो कभी बुझती नहीं
उस प्रीत वाली आग की।
कामना के पंथ में
तुम प्रेम रथ मोड़ो।
मौन तो तोड़ो।

एक किला और

फतह किया राजा ने, एक किला और।

सन्देशा भेज कहा, स्वीकारो दासता।
वर्ना हम दिखलायें, बाहर का रास्ता।
अब भी है समय, हमें मानो सिरमौर।

रणभेरी बजी खूब, देखकर सुभीता।
कुटिल चाल चली, युद्ध राजा ने जीता।
प्रजा ने फिर ढूँढा, एक नया ठौर।

क्षत्रप सब राजा के, संग साथ नाचें।
परजा के हाव-भाव, एक एक जाँचे।
आया जी चमचों का, कैसा यह दौर।

हँसी-खुशी आका को, बोलो कब भाती।
राज करो फूट डाल, नीति ही सुहाती।
बात रही इतनी सी, फरमाना गौर।

कौन यहाँ सच कहने, सुनने का आदी।
पीटे जा राज पुरुष, जोर से मुनादी।
पसरेंगे पैर नहीं, छोटी है सौर!

युग बीता अच्छा दिन, एक नहीं आया।
ज्ञानी ने मूरख को, स्वप्न फिर दिखाया।
भूखों को घी चुपड़े, डाल रहा कौर।

देख रहा हूँ

चाँद सरीखा मैं अपने को, घटते देख रहा हूँ।
धीरे धीरे सौ हिस्सों में, बंटते देख रहा हूँ।

तोड़ पुलों को बना लिए हैं, हमने बेढ़व टीले।
देख रहा हूँ मैं संस्कृति के, नयन हुए हैं गीले।
नई सदी को परम्परा से, कटते देख रहा हूँ।
चाँद सरीखा मैं अपने को, घटते देख रहा हूँ।
धीरे-धीरे सौ हिस्सों में, बंटते देख रहा हूँ।

अधुनातन शैली से पूछें, क्या खोया क्या पाया।
कठ पुतली से नाच रहे हम, नचा रही है छाया।
घर घर में ज्वालामुखियों को, फटते देख रहा हूँ।
चाँद सरीखा मैं अपने को, घटते देख रहा हूँ।
धीरे धीरे सौ हिस्सों में, बंटते देख रहा हूँ।

तन मन सब कुछ हुआ विदेशी, फिर भी शोक नहीं है।
बोली वाणी, सोच नदारद, अपना लोक नहीं है।
छद्म शोध से शुद्ध बोध को, हटते देख रहा हूँ
चाँद सरीखा मैं अपने को, घटते देख रहा हूँ।
धीरे धीरे सौ हिस्सों में, बंटते देख रहा हूँ।

मेरा मैं टकरा-टकरा कर, घाट-घाट पर टूटा।
हर कंकर में शंकर वाला, चिंतन पीछे छूटा।
पूरब को पश्चिम के मंतर, रटते देख रहा हूँ।
चाँद सरीखा मैं अपने को, घटते देख रहा हूँ।
धीरे धीरे सौ हिस्सों में, बंटते देख रहा हूँ।

जलेंगे, मरेंगे, पतिंगे जो ठहरे

हमें दीप की
लौ लुभाती रही है।
सदा पास
अपने बुलाती रही है।
रूकेंगे नहीं हम बिठाओ ना पहरे।

समर्पण हमारा
जहाँ जानता है।
समय भी
हमारा कहा मानता है।
छिपे हैं दिलों में बहुत राज गहरे।

तुम्हें रूह से मान
अपना लिया है।
खुशी से भरा यह
तभी से हिया है।
सजा कर रखे स्वप्न हमने सुनहरे।

अजी प्यार आता है
हमको निभाना।
जमाना कहे लाख
हमको दिवाना।
हथेली पे जां के पढ़े हैं ककहरे।

ठूँठ बसंत हुआ

ठूँठ बसंत हुआ,
पुण्य अनन्त हुआ।

कथ्य यहाँ का, शिल्प वहां का,
दर्शन ठूँसा, कहाँ कहाँ का।
दो-कौड़ी की कविता लिखकर
तुक्कड़ पंत हुआ।

साँठ गाँठ तिकड़म से यारी,
खुद को कहता है अवतारी।
लूट, सती की लज्जा चुरकट
यूँ जयवन्त हुआ।

इधर उधर का लूटा-पाटा,
इसको छाँटा, उसको काटा।
दान लिखा कर मंदिर जी में
डाकू संत हुआ।

मिली ना पूरी, बची ना आधी,
हुई समय की यूँ बर्बादी।
जीते जी जीवन का ऐसे,
कैसे अंत हुआ
पुण्य अंनत हुआ।

कमियाँ इस आलाप की

बात-बात में, बात काटता,
बेटा अपने बाप की।
कौन भला, समझेगा पीड़ा,
युग के इस संताप की।

मूल्य सनातन हुए पुरातन
कहता सब बेमानी हैं।
बैठे ठाले बात-बात पर होती
खींचा तानी है।
निर्णय थोपे ऐसे, जैसे
हो पंचायत खाप की।

सन्दर्भों से, कटकर सोचे,
आसमान में उड़ने की।
पिता सँजोये चाहत मन में
अपनी जड़ से जुड़ने की।
छोड़ो, समय गिना ही देगा
कमियाँ इस आलाप की।

एक मुठ्ठी रेत

एक तू ही भर
नहीं अनिकेत।
मैं नदी थी,
रह गई हूँ एक मुठ्ठी रेत।

गाल मेरे चूमते थे
पांखियों के दल।
मुग्ध होती थी स्वयं की
सुन सजल कलकल।
अब सिमट कर रह गई हूं, आह भर समवेत।

पेंग भरते घाट पर आ
शावकों के झुंड।
अब नहीं हैं पास में
सूखे हुए दो कुंड।
कूदते हैं वक्ष पर मेरे, धमाधम प्रेत।

एक पन्ना अथ रहा तो
एक इति इतिहास।
मैं बुझाना चाहती
अब भी सदी की प्यास।
ईख तो मैं हूँ नही! ओ रे सचेतक! चेत।

सगुन पाँखी लौट आओ

एक सन्नाटा यहाँ
वातावरण में गूँजता है।
जून का पारा हमें
बैगन सरीखा भूँजता है।
सूखती संवेदना की
झील तुम आकर बचाओ।
सगुन पाँखी लौट आओ।

आदमी हँसकर नदी की
लाज खुलकर लूट लेता।
बेचकर जल जीव जंगल
धन असीमित कूट लेता।
यह व्यथा तो है हमारी
तुम कथा अपनी सुनाओ।
सगुन पाँखी लौट आओ।

हाल है ऐसा कि अब
हँसता नहीं है सर्वहारा।
सोचता हूँ मैं तुम्हें
किस डाल पर दूँगा सहारा।
ठीक ही होगा
अगर तुम लौट पाओ।
सगुन पाँखी लौट आओ

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

'एकांत मूर्ख के लिए कैदखाना और ज्ञानी के लिए स्वर्ग होता है।' ठीक से याद नहीं कि 'आचार्य रजनीश' का यह कथन कब पढ़ा, पर इसका सदुपयोग लॉकडाऊन पीरियड में सही सही कर पाया। अनचाहा ही सही पर यह संभवत पहला मौका था जब हम सब वैश्विक महामारी कोविड १९ के चलते अपने अपने घरों में कैद कर दिए गए या कैद हो गए।

जो भी हो यह एक अजीब सा चेंज था जिसे मन चाहकर भी स्वीकार नहीं कर पा रहा था पर महामारी की भयाभयता ने दिमाग को कुंद सा कर दिया था, बदलाव के स्तर पर हमारी दिनचर्या ने यू टर्न ले लिया ऐसे में सवाल यह कि समय का सदुपयोग कैसे करें! स्वाध्याय प्रेम के चलते दो चार ग्रन्थ जो घर पर उपलब्ध थे उन्हें पढ़ा कुछ गीत रचे मित्रों के साथ ऑन लाइन गोष्ठियां आयोजित की कुल मिलाकर सकारात्मक ऊर्जा के इस अक्षय श्रोत से अपने आप को प्रोएक्टिव बनाने में कुछ हद तक सफलता मिली। आपातकाल के इस रचनात्मक कट्रीब्यूशन को सहेजने और पाठकों तक पहुँचाने का काम अंतरा शब्द शक्ति मंच के माध्यम से होने जा रहा है जो स्वतः ही इस आपात काल की याद दिलाता रहेगा।

सृजन को प्रोत्साहित कर पाठकों तक यह लघु कृति पहुँचानें और गौरवशाली मंच प्रदान करने में डॉ प्रीति समकित सुराना ने अंतरा शब्दशक्ति से जोड़कर पाठक और लेखक के मध्य जो सेतुबंध का कार्य किया है जो अपने आप में अनुकरणीय तो है ही साथ ही सराहनीय भी! डॉ प्रीति की क्रिएटिविटी ने हम सब को क्रिएटिव और प्रोएक्टिव बनाये रखा, वह भी आपात काल में!

मंच का दिल से आभार।आभार उनकी प्रेरणा के लिए भी और आचार्य की एकांत की परिभाषा के मानक पर खरे उतरने के लिए कम से कम इस छोटी सी कृति के सृजन से ही सही हम सब अपने आपको ज्ञानी तो कह ही सकते हैं।

रचनाकार

मनोज जैन

Email- manojjainmadhur25@gmail.com

Mobile - 9301337806

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-146-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/